संत थॉमस स्कूल, धुर्वा, राँची

कक्षा 8 विषय हिंदी

. . पाठ 12 चणना

प्रश्न उत्त

मौखिक

1. लेखिका की भेंट चणना से तब हुई जब वह अकाल ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने राजस्थान गई थी।
2. गाँव के अधिकतर लोग गांव में सूखा पड़ने के कारण गांव छोड़कर चले गए थे।
3. लेखिका को चणना का गीत ओजस्वी स्वर उसके स्वाभिमान का गीत गाते लग रहा था।
4. चाणना को ताप चढ़ने के कारण सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था ।इस कारण उसे अपना घर छोड़कर शहर आना पड़ा।
5. लेखिका को आसमान में काली घटाओं के बीच लहलहाते खेतों में कर्मरत, गीत गाता प्रसन्न चणना का दृश्य दिखाई दिया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका को राजस्थान के अकाल ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने के लिए नियुक्त किया गया था।
2. चणना के पास उसकी झोपड़ी अपनी पत्नी की स्मृतियों के अलावा उसकी खुरपी, फावड़ा ,दो चार बर्तन ,चूल्हा और एक पोटली शेष रह गया था ।
3. लेखिका चणना के बाहर से साधारण दिखाई देने वाली झोपड़ी में प्रवेश करके सन्न रह गई।
4. चणना की पत्नी ने बर्तन कुट्टी -मिट्टी से बनाए थे । और उन पर गिरे और सफेद रंग से बहुत बारीकी से बेल -बूटे बनाए थे।
5. लेखिका ने चणना को कुछ रुपए देना चाहा।
6. लेखिका को काली घटाओं के बीच लहलहा के खेतों में कर्मरत प्रसन्नता से गीत गाते हुए चणना का दृश्य दिखाई दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1 चणना का व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली था। सांवला रंग ,नाटा कद,गठा हुआ मजबूत शरीर ,चौड़ा माथा, तीखी आँखें नुकीली नाक और कुछ लंबा सिर। चणना कर्मठ ,साहसी, हँसमुख सरल और आशावादी व्यक्ति था ।वह जो भी काम करता उस में तल्लीन हो जाता था ।उसके व्यक्तित्व में सबसे प्रमुख था ।उसका अदम्य साहस और विश्वास वह बंजर धरती पर हल चलाता था ।वह भी इस आशा में कि एकदिन वर्षा जरूर होगी और अकाल खत्म होगा ।उसे अपनी धरती से अपनी मिट्टी से अपने देश से बहुत प्रेम वह स्वाभिमानी देश प्रेमी व्यक्ति था।
2. चणना की बाहर से साधारण दिखने वाली झोपड़ी अंदर से काफी सुंदर थी । झोपड़ी की दीवारों पर गैरु और चूने से कई कलात्मक चित्र बने थे ।मानो किसी निपुण चित्रकार ने उन्हें बनाया हो भीतर की दीवारों पर मिट्टी के निपाई से कई भित्त चित्र बने थे। जमीन पर एक सुंदर चटाई बिछी थी। और अनाज रखने के लिए एक बड़ा सा गोलाकार बर्तन था। उस बर्तन पर गेरू और सफेद रंग से बहुत ही बारीकी से बेल बूटे बनाए गए थे।
3. जब लेखिका ने चन्णना से जो झोपड़ी के भीतर बने चित्रों के बारे में पूछा तो चनणना ने अपनी पत्नी के बारे में बताया ।उसने बताया कि झोपड़ी के अंदर सारे चित्र उसी ने बनाए थे। उसके हाथ में जादू था मिट्टी छू लेती तो मिट्टी बोलने लगती। बांस की छाल से सुंदर टोकरे और चटाई या बनाती थी स्फूर्ति थी उसमें । उसका गुदा हुआ चेहरा ऐसा फूलासा दिखता था कि गाँव के लोग देखते ही रह जाते थे। उसकी आवाज में जादू था।
4. चणना के व्यक्तित्व और व्यवहार को देखकर लेखिका के मन में भीलों के प्रति अनोखा आदर भाव पैदा हो गया ।चणना गाँव के लोगों को दर्शाता था ।उसकी दो टूक साफ-सुथरी बातें पारदर्शी ,शीशे के समान स्पष्ट

उजले विचार और अपने मन को साफ-साफ खोल कर रख देने वाला व्यवहार चणना को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की कमी नहीं खटकता था ।और वह लेखिका को किसी सन्यासी से कम नहीं लगा।' अतिथि देवो भव ' वाली भारतीय संस्कृति की अनुपालना करने वाला चणना अत्यंत महान प्रतीत हो रहा था।
5. लेखिका क्षेत्र में हो रहे सड़क और पुल निर्माण की प्रगति संबंधी समाचार के क्रम में पत्रकारों के एक दल के साथ दक्षिणी राजस्थान के दौरे पर गई थी । जब लेखिका की जीप सड़क के किनारे रुकी और सब चाय पीने लगे । तभी एक दुबला - पतला सा चणना 'बाईसा ....बाईसा ...'कहकर दौड़ा आ रहा था। तब लेखिका की चणना से दूसरी मुलाकात हुई।
6. जब लेखिका ने चणना से हरी -भरी क्यारियों के बारे में पूछा, तब चणना ने बताया कि वह हिम्मत नहीं हारा था ।दस कोस से घड़ा - घड़ा पानी सिर पर ढो कर लाता था और पौधों को पानी देता था। उसके गाँव छोड़ने के बाद अब वह भी खत्म हो चुके थे। उसने आगे यह भी कहा कि उसे उसकी धरती बुलाती है ।रात दिन आंखों के सामने वही चित्र रहता है। सपने में भी गाँव हीं आते हैं और उसकी पत्नी सुवटी उसे सपने में दिखाती है। यह कह कर चणना की आँखें भर आई।